Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 17

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

30 जून 2016 ई 24 रमज़ान 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

दृढ़ता से अभिप्राय है कि ऐसा ईमान दिल में रच जाए कि किसी परीक्षा के समय ठोकर न खाएं और ऐसी शैली और ऐसे रूप में अच्छे कर्म प्रकट हों कि उनमें आनन्द पैदा हो और श्रम और कड़वाहट महसूस न हो और उनके बिना जी ही न सकें।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इन आयतों में जो अनुभूति का बिंदु छुपा है वह यह है कि ऊपर वर्णित आयत में ख़ुदा तआला ने यह फरमाया है कि

الٓمّٓ ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ لَا رَيۡبَ ۛ فِيۡهِ ۛ هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ

अर्थात यह वह किताब है जो ख़ुदा तआला के ज्ञान से प्रकट हुई है और चूंकि उसका ज्ञान, अज्ञानता और भूल चूक से पवित्र है इसलिए यह किताब प्रत्येक संदेह से खाली है और जब ख़ुदा तआला का ज्ञान मनुष्यों की पूर्णता के लिए अपने अंदर एक पूर्ण शक्ति रखता है इसलिए यह किताब मुत्तकियों के लिए एक सही मार्गदर्शन है और उन्हें उस स्थान तक पहुंचाती है जो मानव प्रकृति के विकास के लिए अंतिम स्थान है और ख़ुदा इन आयतों में फरमाता है कि मुत्तकी वे हैं कि जो छुपे हुए तरीके से ख़ुदा पर विश्वास करते हैं और नमाज़ को स्थापित करते और अपने मालों में से कुछ ख़ुदा के रास्ते में देते हैं और पवित्र कुरआन और पहली किताबों पर ईमान लाते हैं वही हिदायत के सिर पर हैं और वही मुक्ति पाएंगे। इन आयतों से पता चला कि मुक्ति नबी पर विश्वास और उसके निर्देशों नमाज़ आदि के करने के बिना नहीं मिल सकती और झूठे हैं जो नबी का दामन छोड़कर केवल ख़ुश्क एकेश्वरवाद से निजात ढूंढते हैं। मगर गांठ समाधान के योग्य रही कि जब वे लोग ऐसे नेक हैं कि छुपे हुए ख़ुदा पर विश्वास लाते और नमाज़ भी अदा करते हैं और रोज़ा भी रखते हैं और अपने मालों में ख़ुदा के रास्ते में कुछ देते हैं और पवित्र कुरआन शरीफ और पहली किताबों पर विश्वास भी रखते हैं तो यह फ़रमाना कि "हुदन लिल् मुत्तकीन" अर्थात उन्हें यह किताब निर्देश देगी इसके क्या अर्थ हैं वे तो इन सब बातों को कर के पहले ही हिदायत प्राप्त हैं और प्राप्त किए गए को प्राप्त कराना यह तो एक व्यर्थ बात मालूम होती है।

इसका जवाब यह है कि वे लोग भी बावजूद ईमान और नेक कर्मों के पूर्ण दृढ़ता और पूर्ण तरक्की के मुहताज हैं जिस का मार्गदर्शन केवल ख़ुदा ही करता है। मानव प्रयास का इसमें दखल नहीं। दृढ़ता से अभिप्राय है कि ऐसा ईमान दिल में रच जाए कि किसी परीक्षा के समय ठोकर न खाएं और ऐसी शैली और ऐसे रूप में अच्छे कर्म प्रकट हों कि उनमें आनन्द पैदा हो और श्रम और कड़वाहट महसूस न हो और उनके बिना जी ही न सकें। मानो वह कर्म रूह का आहार हो जाएं और उसकी रोटी बन जाएं और उसका मीठा जल हो जाएं कि बिना इस के जीवित न रह सकें। अत: दृढ़ता के बारे में ऐसे हालात पैदा हो जाएं जिन्हें मनुष्य मात्र अपनी कोशिश से उत्पन्न नहीं कर सकता बल्कि जैसा कि रूह की ख़ुदा की तरफ से प्रेरणा होती है वह आदत से बढ़ कर दृढ़ता भी ख़ुदा से पैदा हो जाए।

और तरक्की से अभिप्राय यह है कि वह इबादत और ईमान जो मानवीय प्रयासों का अन्तिम छोर है इसके अतिरिक्त वह स्थिति पैदा हो जाए जो केवल ख़ुदा तआला के हाथ से पैदा हो सकते हैं। यह बात स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला पर ईमान लाने के बारे में मानव प्रयास और बुद्धि केवल इस हद तक मार्ग दर्शन करती है कि इस अदृश्य ख़ुदा पर जिसका चेहरा नहीं देखा गया ईमान लाया जाए। इसलिए शरीयत जो मनुष्य को अपनी शक्ति से अधिक तकलीफ देना नहीं चाहती, इस बात के लिए मजबूर नहीं करती कि मनुष्य अपनी शक्ति से ग़ैब पर ईमान से बढ़कर विश्वास हासिल करे। हां सच्चों को इसी आयत "हुदन लिल् मुत्तकीन" में वादा किया गया है कि जब वे ग़ैब के ईमान पर दृढ़ हों और जो कुछ वह अपनी कोशिश से कर सकते हैं कर लें तब ईमान की हालत से इर्फान (ज्ञान) की स्थिति तक पहुंचा देगा और उनके विश्वास में एक और रंग पैदा कर देगा। कुरआन शरीफ की सच्चाई की यह एक निशानी है कि वे जो उसकी ओर आते हैं उन्हें इस स्तर विश्वास और कर्म पर रखना नहीं चाहता कि वह अपनी कोशिश से अपनाते हैं क्योंकि अगर ऐसा हो तो कैसे ज्ञात हो कि ईश्वर है बल्कि वह मानवीय प्रयासों पर अपनी ओर से एक परिणाम निर्धारित करता है जिस में ख़ुदाई चमक और ख़ुदाई ताकत होती है यथा जैसा कि मैंने उल्लेख किया मनुष्य ख़ुदा पर ईमान के विषय में अधिक क्या कर सकता है कि वह अदृश्य ख़ुदा पर ईमान लाए जिसके अस्तित्व पर कण कण इस जगत का गवाह है। मगर इंसान की यह तो शक्ति ही नहीं है कि केवल अपने ही पैरों और अपनी ही कोशिश और अपने ही हाथों के ज़ोर से ख़ुदा के इलाही अनवार पर सूचना पाए और ईमान की स्थिति से इरफान की स्थिति तक पहुँच जाए और निरीक्षण और रोउयत की स्थिति अपने अंदर पैदा कर ले।

इसी तरह मानवीय प्रयास और कोशिश नमाज़ के अदा करने में इस से अधिक क्या कर सकती है कि जहां तक हो सके पवित्र और साफ होकर और खतरों को नकार कर नमाज़ अदा करें और कोशिश करें कि नमाज़ एक गिरी हुई हालत में न रहे और इसके जितना घटक अल्लाह तआला की प्रशंसा तथा स्तुति, और पश्चाताप और इस्तिग़फ़ार और दुआ और दरूद हैं वे दिल के जोश से प्रकट हों लेकिन यह तो मनुष्य के विकल्प में नहीं है कि एक आदत से हटकर निजी प्यार और निजी विनम्रता और आनन्द से भरा शौक और हर एक गन्दगी से ख़ाली समक्ष उसकी नमाज़ में पैदा हो जाए मानो वह ख़ुदा को देख ले और स्पष्ट है कि जब तक नमाज़ में ये स्थिति पैदा न हो वह नुकसान से खाली नहीं। इसलिए ख़ुदा तआला ने फरमाया कि मुत्तकी वे हैं जो नमाज़ को खड़ी करते हैं और खड़ी वही चीज़ की जाती है जो गिरने के लिए तत्पर है। इसलिए आयत يُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ के यह अर्थ हैं कि जहां तक हो सकता है नमाज़ को स्थापित करने के लिए कोशिश करते हैं और चेष्ठा और कोशिशों से काम लेते हैं मगर मानवीय प्रयास ख़ुदा तआला के फज़ल के बिना बेकार हैं। इसलिए उस कृपालु तथा दयालु ने कहा هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ अर्थात जहां तक संभव हो वह तक्वा के मार्ग से नमाज़ को स्थापित करने में कोशिश करें। फिर अगर वह मेरी वाणी पर ईमान लाते हैं तो उन्हें केवल उन्हीं की कोशिश और चेष्टा पर नहीं छोड़ूंगा बल्कि मैं उन की सहायता करूँगा। तब उनकी नमाज़ एक और रंग पकड़ जाएगी और एक और स्थिति उनमें पैदा हो जाएगी जो उनके विचार व चिन्ता में भी नहीं था। यह अनुग्रह केवल इसलिए होगा कि वह ख़ुदा तआला की वाणी कुरआन शरीफ पर ईमान लाए और जहां तक हो सका उसकी आज्ञाओं के अनुसार कार्य में लगे हुए है। अत: नमाज़ के बारे में जो अधिक हिदायत का वादा है वह यही है कि इतना भौतिक जोश और व्यक्तिगत प्रेम और विनम्रता और पूर्ण समक्षता उपलब्ध हो जाए कि मनुष्य की आंख अपने वास्तविक प्रिय के देखने के लिए खुल जाए और एक आदत से हट कर अल्लाह तआला के देखने की स्थिति उपलब्ध आ जाए जो आध्यात्मिक आनन्द से परिपूर्ण हो और सांसारिक गंदगियां और विभिन्न प्रकार की गन्दगियां कथनीय और करणीय और दृश्यनीय और श्रवणीय से दिल को दूर कर दे, जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है اِنَّ الۡحَسَنٰتِ يُذۡهِبۡنَ السَّيِّاٰتِ

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 136 -139)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी(अ) अहमदिया जमाअत के संस्थापक कोई नया धर्म नहीं लाए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि

(27 दिसम्बर 1938 ई जलसा सालाना कादियान की तकरीर का एक अंश)(भाग -2 अन्तिम भाग)

फिर यह जो बात थी कि ईसा अलैहिस्सलाम के वापस आने से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान या अपमान। इस दृष्टि से भी अगर ध्यान किया जाए तो ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु प्रमाणित है बल्कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज्ज़त का सवाल ही नहीं अगर ईसा अलैहिस्सलाम के फिर से आने से ख़ुदा तआला की इज्ज़त हो तब भी हम उनके दोबारा आने को पहचान सकते हैं क्योंकि हम चाहते हैं कि ख़ुदा का सम्मान दुनिया में स्थापित हो लेकिन अगर ईसा अलैहिस्सलाम के फिर आने की आस्था स्वीकार करने में न केवल रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान हो बल्कि ख़ुदा तआला का भी अपमान हो तो समझ लेना चाहिए कि विश्वास से बढ़कर ख़तरनाक और कोई विश्वास नहीं हो सकता। अगर ख़ुदा तआला की इज्ज़त का सवाल लो तो सीधी बात है कि आस्था की दृष्टि से यह माना जाता है कि 19 सौ साल से ख़ुदा तआला ने एक व्यक्ति को संभाल कर रखा हुआ है कि कहीं वह बर्बाद न हो और सुधार भाव का काम रुक न जाए मानो जैसे ग़रीब आदमी अपनी चीजों को संभाल संभाल कर रखता है उसी तरह ख़ुदा ने भी अपनी इस बात को ख़ूब सुरक्षित रखा हुआ है। अत: अमीर और गरीब में क्या अंतर होता है यही फर्क होता है कि ग़रीब आदमी अगर सुबह की दाल बच जाए तो पत्नी से कहता है उसे संभाल कर रख देना रात को काम आएगी। या सर्दियों में अगर उसे कोई गर्म कपड़ा मिलता है तो सर्दियां समाप्त होने पर निहायत सुरक्षा से परस्पर बांध कर रख देता है या संदूकों में सुरक्षा से बंद करता है कि अगली सर्दियों में कपड़े काम आएं। रोटियाँ बच जाती हैं तो वह रख लेता है। इस के मुकाबला में अमीर आदमी का काम होता है कि वह कुछ दिन कपड़ा पहनता है और फिर यह विचार करके कि ख़ुदा ने कुछ दिन नए कपड़े पहनने की तौफ़ीक़ दी है अब गरीबों का भी कुछ अधिकार है वह इस पोशाक को उठाता और किसी गरीब को देदेता। खाना पकता है तो जितना खाना आसानी से खाया जा सके वह खा लेता है और बाकी बन्दों को दे दिया है। या उनकी बेगमात में आसपास के गरीबों में बांट देती हैं। वह इन कपड़ों या खाने को संभाल कर नहीं रखते क्योंकि वे कहते हैं कि जब ज़रूरत होगी हम नए उत्पाद विकसित कर लेंगे लेकिन अल्लाह तआला जो सक्षम है और जो क़ुदरत इस बात की मांग करती है कि जब भी धर्म के लिए नई चीज़ की आवश्यकता हो वह अपनी क़ुदरत से इस नई वस्तु को प्रदान कर दे। इसके बारे में मुसलमान यह विश्वास रखते हैं कि वह उन्नीस सौ साल से ईसा अलैहिस्सलाम को संभाल कर जन्नत पर जीवित रखा हुआ है सिर्फ इसलिए कि उम्मते मुहम्मदिया जब अंतिम समय में धार्मिक आधार से नुकसान पहुंचा तो उसके निवारण के लिए उसे जन्नत से प्रगट करूंगा। मानो वही कंगालों वाली बात हुई जो सुबह की दाल बचाकर शाम के लिए रख लेते हैं। अत: ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने जीवन में कौन से कारनामे किए थे कि अंतिम दिनों में भी उन्हीं का भेजा जाना ख़ुदा को पसंद आया। उन्होंने दुनिया में यही काम किया कि कुछ दिन लोगों को उपदेश और जब यहूदियों ने क्रूस पर लटकाना चाहा तो आसमान पर चले गए। इसमें उन्होंने कौन सी ऐसी सफलता हासिल की थी कि अंतिम दिनों में भी उनका वंश ज़रूरी था। जो जन्नत में चला गया उसने दूसरे शब्दों में दुनिया को पीठ दिखा दी। अब वह व्यक्ति जो दुनिया को पीठ दिखा चुका है और जिस ने अपने ज़माने का काम भी पूरा नहीं किया वह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत का काम करेगा और किस सफलता की उम्मीद रखी जा सकती है। इसलिए यह अल्लाह तआला का गंभीर अपमान है और इस विश्वास को स्वीकार करने से अल्लाह तआला की क़ुदरत पर बहुत बड़ा आरोप आता है और कहना पड़ता है कि नाऊज़ बिल्लाह ख़ुदा सक्षम नहीं और ज़रूरत पर वह उम्मते मुहम्मदिया में किसी नए आदमी को तैयार नहीं कर सकता ।

फिर न केवल अल्लाह तआला की क़ुदरत पर इससे आरोप आता है बल्कि उस के ज्ञान पर भी आरोप आता है कि वह जो मुकाबले के मैदान में बिल्कुल काम न कर सका उसी के सुपुर्द उम्मते मुहम्मदिया के सुधार का काम कर दिया। मगर आश्चर्य है कि ईसा अलैहिस्सलाम से तो अल्लाह तआला का यह व्यवहार हो और उधर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह व्यवहार हो कि आप पर ख़तरनाक से ख़तरनाक अवसर आए मगर एक बार भी ख़ुदा तआला ने आप को आकाश में न उठाया।

हुनैन के युद्ध में जबकि चार हज़ार अभ्यस्त आप पर तीरों की बारिश बरसा रहा था और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आसपास केवल बारह आदमी रह गए थे तब सहाबा आपके पास आते हैं और कहते हैं या रसूल अल्लाह! यहाँ खड़े रहने का अवसर नहीं, आप के जीवन के साथ इस्लाम का जीवन जुड़ा है, आप किसी सुरक्षित स्थान में चलें जब दुश्मन के हमले का ज़ोर टूट जाएगा तो हम फिर इस्लामी लश्कर इकट्ठा करके उस पर हमला कर देंगे। इसलिए कुछ सहाबा इसी जोश में आप के घोड़े की बागडोर पकड़ लेते हैं मगर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फर्माते हैं छोड़ दो मेरे घोड़े की बागडोर को मैं नबी हूँ झूठा नहीं हूँ। ख़ुदा इस नबी को तो वफात दे दे और उसे मृत्यु देकर मिट्टी में दफन होने दे मगर ईसा अलैहिस्सलाम अभी क्रूस पर न चढ़े कि ख़ुदा तआला आप को बचाने के लिए आकाश पर उठा ले। इस विश्वास को कोई सम्मान वाला मुसलमान बर्दाश्त नहीं कर सकता। अगर कोई नबी जीवित रखने में सक्षम था तो वह हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही थे मगर उन्हें तो ख़ुदा तआला बचाता नहीं है और वे जान देने के लिए भी तैयार हो जाते हैं लेकिन ईसा अलैहिस्सलाम को झट बचा लेता और आकाश पर उठा लेता है। फिर यह भी तो देखना चाहिए कि ईसा अलैहिस्सलाम पर परीक्षाएं क्या आईं और अगर आईं तो उन्हें चाहिए था कि उसे सहन करते मगर बजाय वह ख़ुशी के साथ परीक्षा सहन करते झट दुआ करने लग गए। यहां तक कि बाईबल में लिखा है वह सारी रात दुआ करने में बिता दी और वह बार बार अपने चेलों को जगाते और कहते कि दुआ क्यों नहीं करते कि यह प्याला मुझ से टल जाए। इसलिए वह जिसने कहा था कि यह मौत का प्याला मुझ से टल जाए उसे तो ख़ुदा आसमान पर उठा लेता है मगर वह जिसने कहा था कि मुझे छोड़ दो मैं अकेला दुश्मन का मुकाबला करूंगा उसे ख़ुदा ने मृत्यु दे दी। मानो जिसने मर्दाना वार काम किया था उसे तो पेंशन देदी और जो युद्ध के मैदान से पीठ मोड़ कर घर आ गया था उसे एक्स टेनशन (EXTENSION) दे दी।

अब देख लो कि इस धारणा को स्वीकार करने में ख़ुदा का सम्मान है और न रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान। फिर यह आस्था रखने में हज़रत मसीह की भी तो कोई इज्ज़त नहीं। हमारे पास तो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम क्रूस से बच गए थे मगर दूसरे मुसलमानों के नज़दीक आसमान पर भाग गए थे। यही एक नबी का सबसे बड़ा अपमान है कि जो काम उसे सौंपा था वह तो उसने न किया और आसमान पर जा बैठा। फिर ख़ुदा ने तो हज़रत मसीह को नबी करार दिया है मगर मुसलमान कहते हैं कि अंतिम दिनों में जब वह प्रकट होगा तो नबी नहीं होंगे बल्कि उम्मती होंगे मानो जिसे ख़ुदा ने स्थायी नबी बताया था उसे वह अधीन नबी बना देते हैं और इस तरह उसके अपमान के प्रतिबद्ध हैं। अगर यह कहा जाता है कि चूँकि ईसा अलैहिस्सलाम मैदान छोड़कर चले गए थे इसलिए उसकी सज़ा में उन्हें उम्मती बना दिया जाएगा तो यद्यपि फिर भी एक नबी का अपमान होता मगर यह बात कुछ हद तक उचित करार दी जा सकती थी। लेकिन बिना कोई दोष बताए मौलवियों द्वारा यह मस्ला पेश किया जाता है कि ख़ुदा उन्हें स्थायी नबी के बदले अधीन नबी बना देगा और इस तरह वे अपने कर्म से ईसा अलैहिस्सलाम का भी अपमान करते हैं। फिर ये लोग इतना नहीं सोचते कि जो व्यक्ति इस्राईल में एक छोटे से फित्ना का मुकाबला न कर सका वह उम्मते मुहम्मदिया में आकर इस दज्जाल के फ़ित्ने का कैसे मुकाबला कर सकता है जिस से बड़ा फितना आज तक दुनिया में कोई हुआ ही नहीं। इसलिए अगर ईसा अलैहिस्सलाम जीवित आसमान में माना जाए तो इसमें ख़ुदा का भी अपमान है। ईसा अलैहिस्सलाम का भी अपमान है और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी अपमान है। मैंने हमेशा कहा है कि इसका उदाहरण ऐसा ही है जैसे किसी के घर का दिया बुझ जाए तो वह किसी और के घर से तीली मांगने जाता है ताकि अपने लैंप को रोशन करे। वह अमीर लोग जिनके घरों में बिजली के लैंप होते हैं वे शायद इस बात को न समझ सकें लेकिन

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आज 27 मई है और जैसा कि हर अहमदी जानता है इस दिन जमाअत अहमदिया में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद ख़िलाफत शुरू हुई और इस के अनुसार जमाअत में यह दिन ख़िलाफत दिवस के रूप में मनाया जाता है या अल्लाह तआला के वादे, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दूसरी क़ुदरत के बारे में दी हुई ख़ुश ख़बरी पर हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि अल्लाह तआला ने हमें बिखरने से बचा लिया। हमें एक सूत्र में पिरो दिया और इस संबंध में हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम अहमदिया ख़िलाफत की स्थापना और हमेशा जारी रखने के लिए सभी प्रकार के कुरबानी के लिए भी तैयार रहेंगे। (इंशा अल्लाह तआला)

जमाअत अहमदिया के पिछला 108 साल का इतिहास इस बात पर गवाह है कि इस प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए एक के बाद दूसरी पीढ़ी ने मज़बूत कदम के साथ क़ुरबानियां दीं। अल्लाह तआला भविष्य में भी जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति को जो इस समय जमाअत में या आगे इंशा अल्लाह तआला शामिल होगा हमेशा इस वादा को निभाने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाता रहे।

अगर हम तौहीद (एकेश्वरवाद) पर स्थिर रहें और मानव जाति की सहानुभूति में तरक्की करते रहें, अहमदिया ख़िलाफत के साथ जुड़े रहें तो सारी उन्नतियां जिनका अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा किया है उन्हें भी हम देखने वाले होंगे।

इसमें कोई शक नहीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित जमाअत ने तरक्की करनी है यह ख़ुदा तआला का वादा है। हम में से हर एक को अपनी समीक्षा करनी होगी कि हम अल्लाह तआला के अधिकार और बन्दों के अधिकार के लिए क्या कर रहे हैं दुनिया की नज़र हमारी तरफ है। अल्लाह तआला ने भी यह काम हमें सौंपा है कि तौहीद स्थापित करें। ख़ुद भी अल्लाह तआला के निकट हों और दुनिया को अपने बनाने वाले एकमात्र व अकेले ख़ुदा तआला के निकट करने की कोशिश करें और मानवता के मूल्यों को स्थापित करें।

अहमदिया ख़िलाफत और जमाअत अहमदिया के उद्देश्य वही हैं जिसे पाने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा था और वह यही है कि बन्दा को ख़ुदा तआला के निकट करने के लिए पूरी कोशिश करना और मानव जाति के अधिकार देना। इस से अधिक हमारा कोई लक्ष्य नहीं।

इस यात्रा में अल्लाह तआला की कृपा से मीडिया के साथ भी काफी साक्षात्कार हुए। दूसरों के साथ माल्मो मस्जिद के उद्घाटन के अतिरिक्त डेनमार्क और स्टॉकहोम में दो receptions भी हुईं। जिस में इस्लाम और कुरआन की सही शिक्षा और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्तम आदर्श और चारों ख़लीफाओं के नमूनों को लेकर बातें हुईं तो प्राय सब ने स्पष्ट रूप से इस बात को व्यक्त किया कि आज हमें इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का पता चला है।

डेनमार्क, स्वीडन के सफर में विभिन्न समारोहों, रेडियो ,टीवी तथा अख़बारों के प्रतिनिधियों के साथ इन्ट्रवियू, समारोहों में सम्मिलित मेहमानों के ईमान वर्धक प्रतिक्रियाओं का वर्णन।

वास्तविक ख़िलाफत केवल अपनों के भय को शांति में नहीं बदलती बल्कि दूसरों के भय को भी शांति में बदलती है और यही प्राय प्रतिक्रियाएं हैं जो लोगों ने वर्णन की हैं उन्होंने ये कहा है जिसका सार मैंने वर्णन किया है कि उनके जो भय की स्थितियाँ थीं वह यहाँ हमारे फंगशनों पर आकर शांति में तब्दील हो गईं। यह क्योंकि अल्लाह का वादा है और इसलिए अल्लाह तआला के समर्थन भी साथ हैं जिस से इस्लाम की सुंदर शिक्षा दूसरों पर प्रभाव डालती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से हटकर अगर कोई इस ज़माने में ख़िलाफत की स्थापना करना चाहता है या चाहेगा तो वह विफल होगा और शांति स्थापित नहीं कर सकेगा।

यह ख़िलाफत अहमदिया ही है जो अपनों और दूसरों के भय को शांति में बदल रही है और विभिन्न लोगों की प्रतिक्रियाओं से यह स्पष्ट हो रहा है कि अल्लाह तआला के समर्थन भी ख़िलाफत अहमदिया के साथ हैं और कभी कम नहीं होतीं और जैसा कि मैंने कहा कि पिछले 108 साल का इतिहास इस बात का गवाह है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया था कि अगर यह किसी इंसान का काम होता तो कब का खत्म हो गया होता। अतः यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत की स्थापना और ख़िलाफत का इलाही वादा है और यह ख़िलाफत और ख़िलाफत की प्रणाली अल्लाह की कृपा से हमेशा जारी रहने के लिए है।

अगर हम अपने संसाधनों को देखें तो इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि इतनी बड़ी संख्या में इस्लाम का संदेश पहुंचा सकते हैं लेकिन जब अल्लाह की तकदीर ने तय कर लिया है कि उसने यह संदेश पृथ्वी के किनारों तक पहुंचाना है तो फिर इन उन्नतियों को कौन है कोई सांसारिक शक्ति रोक नहीं सकती।

आदरणीय चौधरी फज़ल अहमद साहिब वकफ पुत्र मास्टर ग़ुलाम मुहम्मद साहिब मरहूम ऑफ ननकाना की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर, आदरणीय दाऊद अहमद साहिब शहीद पुत्र आदरणीय हाजी ग़ुलाम मोहिउद्दीन साहिब कराची, आदरणीय मुहम्मद आज़म इकसीर साहिब पुत्र आदरणीय मौलवी मुहम्मद अशरफ साहिब भैरह की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब और मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 27 मई 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

आज 27 मई है और जैसा कि हर अहमदी जानता है इस दिन जमाअत अहमदिया में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद ख़िलाफत शुरू हुई और इस के अनुसार जमाअत में यह दिन ख़िलाफत दिवस के रूप में मनाया जाता है या अल्लाह तआला के वादे, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दूसरी क़ुदरत के बारे दी हुई ख़ुश

ख़बरी पर हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि अल्लाह तआला ने हमें बिखरने से बचा लिया। हमें एक सूत्र में पिरो दिया और इस संबंध में हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम अहमदिया ख़िलाफत की स्थापना और हमेशा जारी रखने के लिए सभी प्रकार के कुरबानी के लिए भी तैयार रहेंगे। (इंशा अल्लाह तआला)

जमाअत अहमदिया का पिछला 108 साल का इतिहास इस बात पर गवाह है कि इस प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए एक के बाद दूसरी पीढ़ी ने मज़बूत कदम के साथ क़ुरबानियां दीं। अल्लाह तआला भविष्य में भी जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति को जो इस समय जमाअत में या आगे इंशा अल्लाह तआला शामिल होगा हमेशा इस वादा को निभाने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाता रहे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने भेजे जाने का उद्देश्य बन्दे को ख़ुदा तआला के निकट लाना और अल्लाह तआला के सभी अधिकार देना और बन्दों को एक दूसरे के अधिकार को अदा करने की ओर ध्यान दिलाना बताया है। पत्रिका अल-वसीयत में भी ख़िलाफत की स्थापना की ख़ुश ख़बरी प्रदान कर के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन बातों को ही हमें अपने जीवन का हिस्सा बनाने के लिए हिदायत फ़रमाई है। इसलिए पत्रिका अल-वसीयत में एक जगह आप फरमाते हैं कि

" यदि तुम पूरी तरह से ख़ुदा की ओर झुकोगे तो देखो ख़ुदा की इच्छा के अनुसार तुम्हें कहता हूँ कि तुम ख़ुदा की एक चुनी हुई क़ौम हो जाओगे। ख़ुदा की महिमा दिलों में बिठाओ और उसकी तौहीद को न केवल ज़बान से स्वीकार करो बल्कि व्यावहारिक रूप से भी करो तो ख़ुदा भी वस्तुत: अपना उपकार तथा एहसान तुम पर प्रकट करे।"

फरमाया "द्वैष से परहेज़ करो और मानव जाति से सच्ची हमदर्दी से पेश आओ। प्रत्येक नेकी की राह को धारण करो। न जाने किस मार्ग से तुम स्वीकार किए जाओ।"

(रिसाला अल्वसिय्यत रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 309)

तो अगर हम तौहीद (एकेश्वरवाद) पर स्थिर रहें और मानव जाति की सहानुभूति में तरक्की करते रहें, अहमदिया ख़िलाफत के साथ जुड़े रहें तो सारी उन्नतियां जिनका अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा किया है उन्हें भी हम देखने वाले होंगे। इस बात की भी अल्लाह तआला से सूचना पाकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें खुश ख़बरी दी है।

आप फरमाते हैं कि

"यह मत विचार करो कि ख़ुदा तुम्हें बर्बाद कर देगा तुम ख़ुदा तआला के हाथ का एक बीज हो जो धरती में बोया गया। ख़ुदा फरमाता है यह बीज बढ़ेगा और फूलेगा और प्रत्येक तरफ उसकी शाखाएं निकलेंगी और एक बड़ा पेड़ हो जाएगा।"

(रिसाला अल्बसिय्यत रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 309)

अत: इसमें कोई शक नहीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित जमाअत ने तरक्की करनी है यह ख़ुदा तआला का वादा है। हम में से हर एक को अपनी समीक्षा करनी होगी कि हम अल्लाह तआला के अधिकार और बन्दों के अधिकार के लिए क्या कर रहे हैं दुनिया की नज़र हमारी तरफ है। अल्लाह तआला ने भी यह काम हमें सौंपा है कि तौहीद स्थापित करें। ख़ुद भी अल्लाह तआला के निकट हों और दुनिया को अपना बनाने वाले एकमात्र व अकेले ख़ुदा तआला के निकट करने की कोशिश करें और मानवता के मूल्यों को स्थापित करें।

पिछले दिनों में scandinavia देशों के दौरे पर था तो वहाँ कुछ पत्रकारों ने और दूसरे पढ़े लिखे लोगों ने भी यह सवाल पूछा कि तुम्हारे लक्ष्य क्या हैं।? उन्हें यही कहता रहा कि अहमदिया ख़िलाफत और जमाअत अहमदिया के उद्देश्य वही हैं जिसे पाने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा था और वह यही है कि बन्दा को ख़ुदा तआला के निकट करने के लिए पूरी कोशिश करना और मानव जाति के अधिकार देना। इस से अधिक हमारा कोई लक्ष्य नहीं है क्योंकि आज की दुनिया में हम देख रहे हैं कि दुनिया ख़ुदा तआला को भूल रही है और प्राय मानवता की सेवा के नाम पर अपने हित प्राप्त करने के लिए की जाती है। जिससे अधिक व्याकुलता पैदा हो रही है और देशों और जातियों के संबंध में दूरियां पैदा हो रही हैं। इस युग में यह बात दनियादारों को बड़ी मुश्किल से समझ आती है कि बिना अपने हितों के केवल ख़ुदा तआला की प्रसन्नता पाने के लिए कैसे तुम यह कर सकते हो। अब शायद इन लोगों का दुनिया वाले लोगों का विचार है कि प्यार के नाम पर तुम अहमदी जो हो यह दूसरों के पास आ रहे हो या लोगों को करीब लाने की कोशिश कर रहे हैं और बाद में जब तुम्हारी ताकत हो, सरकारों पर कब्ज़ा करो शायद यह अपने लक्ष्य हो जिसके लिए यह प्रक्रिया अपनाई। स्टॉकहोम विश्वविद्यालय के इस्लाम के एक प्रोफेसर ने भी इस प्रकार का एक अवसर पर सवाल किया तो उसे मैंने जवाब दिया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस शेर में जो जवाब है कि

मुझ को क्या मुल्कों से मेरा मुल्क है सबसे जुदा
मुझ को क्या ताजों से मेरा ताज है रिज़वान यार

और यही अहमदिया ख़िलाफत और जमाअत अहमदिया का उद्देश्य है। इस सफर में अल्लाह तआला की कृपा से मीडिया के साथ भी काफी साक्षात्कार हुए। दूसरों के साथ माल्मो मस्जिद के उद्घाटन के अतिरिक्त डेनमार्क और स्टॉकहोम में दो receptions भी हुईं। जिस में इस्लाम और कुरआन की सही शिक्षा और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्तम आदर्श और चारों ख़लीफाओं के नमूनों को लेकर बातें हुईं तो प्राय सब ने स्पष्ट रूप से इस बात को व्यक्त किया कि आज हमें इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का पता चला है और हमेशा यही हुआ है और दुनिया में आजकल जमाअत अहमदिया के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर जो भी शांति के नाम पर मज्लिसें होती हैं, सम्मेलन होते हैं, संगोष्ठियां होती हैं उसमें यही अभिव्यक्ति लोग करते हैं और इस का कारण यही है कि आज दुनिया में एक ही तरह और एक ही विषय पर और अपनी पूरी कोशिश के साथ पश्चिम में और पूर्व में भी उत्तर में भी दक्षिण में भी प्रत्येक जगह यही कोशिश की जा रही है वह इसलिए कि जमाअत अहमदिया ख़िलाफत के साथ जुड़ी हुई है और उसके निर्देशों पर काम करती है।

जैसा कि मैंने कहा इस बात को प्राय अधिकतर लोगों ने व्यक्त किया कि वास्तविक शिक्षा का हमें अब पता चला है और आज हमें जमाअत अहमदिया के ख़लीफा से इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का ज्ञान हुआ। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद जारी ख़िलाफत की प्रणाली ने न केवल मानने वालों की अगुवाई की और करती है या ख़िलाफत मार्गदर्शन करती है बल्कि दूसरों को, इस्लाम के विरोधियों को या इस्लाम से भय खाने वालों को भी सही इस्लामी शिक्षा के नमूने दिखाती है। ग़ैरों पर हमारे फंकशन में आकर क्या प्रभाव होता है? अब उसके कुछ नमूने पेश करता हूँ।

डेनमार्क में होटल में एक reception थी। जिस में पार्लियामेंट के सदस्य भी आए थे, वहां की संस्कृति और धर्म के मिनिस्टर थे, मेयर और राजनेता भी विभिन्न वैज्ञानिक व्यक्तित्व भी और बौद्धिक प्रतिनिधि भी आए थे। उन्होंने इस फंकशन को सुना, देखा और बिना अन्तर के सभी ने व्यक्त किया कि हमें इस्लाम की शिक्षा का सही ज्ञान हुआ है।

Stenhalfmen एक डेनिश मेहमान थे। कहने लगे कि ख़लीफा का भाषण सुनकर मुझे बहुत संतोष हुआ है और ख़ुशी हुई कि आज के इस दौर में ऐसे संदेश की बहुत सख्त ज़रूरत थी। फिर कहने लगे कि अल्लाह तआला करे कि सेकेंड नेविया में ख़लीफा के शब्द उत्कृष्ट रंग में समझे जाएं।

फिर वहां का डेनमार्क का एक शहर नाकस्को है वहां काफी संख्या में लोग आए हुए थे। इस शहर की मेयर भी और राजनेता भी अन्य पढ़े लिखे लोग भी। वहां की परिषद के एक सदस्य थे वह कहते हैं कि ख़लीफा का भाषण बहुत प्रभाव रखता था। मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हुई कि लाखों मुसलमान बिना किसी डर के केवल दुनिया में शांति की स्थापना के लिए एक उज्ज्वल मीनार की तरह खड़े हैं और ये लोग हैं जो जमाअत अहमदिया से जुड़े हैं।

फिर एक मेहमान ने भाषण के बाद कहा मेरी मेज़ पर बैठे सभी लोग इस्लाम को सही समझने की बात कर रहे थे। लोग कह रहे थे कि यह वास्तव में बड़ी ख़ुशी की बात है कि इस्लाम इस सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है, विशेष कर के डेनिश लोग तो इस्लाम के एक पहलू को ही जानते हैं। वे जानते ही नहीं कि इस्लाम के अंदर विभिन्न समुदाय भी मौजूद हैं जो शांति चाहते हैं। कहने लगे मेरे निकट यह बताना बहुत ज़रूरी है और मुझे विश्वास है कि आज इस समारोह में शामिल सभी मेहमान एक नए संकल्प के साथ घर जाएंगे। और विशेष रूप से डेनमार्क में जहां आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ग़लत रंग में कार्टून बनाया गया था और पहली बुनियाद वहीं पड़ी थी तो उन्हें मैंने यही कहा था कि इस से नफरतें पैदा होंगी। शांति ख़राब होगी। तबाही और बर्बादी आएगी और तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा और इस बात को उन्होंने स्वीकार किया कि यद्यपि कि यह मुद्दा ऐसा है जो हमारे लिए बड़ा संवेदनशील है कि कार्टूनों पर बात की जाए लेकिन जिस तरीके से आप ने समझाया हमें बड़ी अच्छी तरह समझ आ गई है।

एक मेहमान ने कहा कि आज के भाषण के बाद लोगों की मुसलमानों के बारे

में राय ज़रूर बदल जाएगी। कहने लगा कि अब मैंने इस्लाम को बेहतर समझने के लिए एक कुरआन भी मंगवाया है जिस में टिप्पणी भी मौजूद हैं और आज की शाम के बाद मुझे अपने कम ज्ञान का भी एहसास हुआ है। कहने लगे कि मैं कुरआन भी पढ़ूंगा।

जैसा कि मैंने कहा नाकस्को से लोग आए थे। जब वे समारोह के बाद वापस जा रहे थे तो एक मेहमान ने लिखा कि हम आप का हज़ारों बार धन्यवाद करते हैं। कहते हैं ये सम्मेलन जीवन भर के लिए एक यादगार पल के रूप में हमेशा याद रहेगा। अनुभव के रूप में याद रहेगा। कहने लगे कोपेनहेगन से नाकस्को वापसी तक कोच में एक विशेष माहौल था सारे मार्ग में सम्मेलन के बारे में बातें होती रहीं और हर एक बात से सहमत था कि हम ने एक बहुत अच्छा दिन गुज़ारा और हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है।

एक पत्रकार ने अपनी भावनाओं को इस तरह व्यक्त किया कि बहुत कुछ सीखा और ख़लीफा के भाषण ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया है, विशेष रूप से इस बारे में कि इस्लाम की छवि जो मीडिया में दिखाई जाती है वह वास्तविकता से बहुत अलग है। फिर कहने लगा कि उनकी किसी बात पर कोई टिप्पणी नहीं कर सकता, क्योंकि उनकी सारी बातें ही प्यार मुहब्बत और एक दूसरे के सम्मान के बारे में थीं और उन्होंने कहा कि यही बातें शांति की कुंजी हैं। फिर कहने लगे कि उन्होंने हमें एक और विश्व युद्ध के खतरे के बारे में बताया और मैं अभी परेशान हूँ मैंने पहले भी एक दो लोगों से सुना है कि हम विश्व युद्ध के करीब हैं, लेकिन मैंने इस पर विश्वास नहीं किया था मगर आज मेरा विचार बदल गया है मुझे अब इसे गंभीरता से लेना है और कहा कि ख़लीफा ने उसे ऐसे अंदाज़ में पेश किया है कि मुझे सोचना पड़ेगा। फिर एक मेहमान महिला अपनी भावनाओं को व्यक्त करती हैं कि ये बातें सोचने पर मजबूर कर देने वाली थीं लेकिन एक अर्थ में परेशान थीं क्योंकि उन्होंने भविष्य के बारे में बहुत गंभीर तस्वीर खींची। उन्होंने हमें युद्ध के खतरों के बारे में चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि शांति के लिए प्रयास करने का अभी समय है नहीं तो हम बाद में पछताएँगे।

फिर एक साहिबा ने, डेनिश मेहमान थीं कहा कि आज से पहले इस्लाम के बारे में नकारात्मक बातें ही जानती थी मगर आज मैंने जो सुना वह अच्छा और प्यार से भरा संदेश था। मैंने सीखा कि ISIS इस्लाम नहीं है और इस्लाम की शिक्षा तो यह है कि सभी धर्मों के उपासना स्थल की रखवाली करनी चाहिए।

एक और डेनिश मेहमान ने कहा। ऐसे आदमी से मिली जिसने यह प्रमाणित कर दिखाया कि मीडिया के माध्यम से इस्लाम के द्वारा जो इस्लाम की तस्वीर दिखाई जा रही है वह ग़लत है। मैं बहुत भावुक और उत्तेजित हो गई हूँ। मैं एक ऐसे व्यक्ति से मिली जिसने मुझे जिहाद का अर्थ बताया। मीडिया की अभिव्यक्ति की आज़ादी और दुनिया में शांति के संतुलन को बनाए रखने के बारे में उनकी बातें मुझे बहुत अच्छी लगीं।

फिर एक डेनिश मेहमान कहने लगे कि ख़लीफा ने अपने संबोधन में कुरआन के हवाले दिए इसी बात से पता चलता है कि उनके शब्द स्वयंभू नहीं बल्कि तथ्य पर आधारित थे। कहने लगे कि इन बातों से प्रमाणित होता है पश्चिम में मुसलमानों के लिए एंटी गरेशन (Integration) संभव है क्योंकि उन्होंने बताया कि इस्लाम पश्चिमी मूल्यों के विरुद्ध नहीं है क्योंकि शांति, सहिष्णुता और दूसरे का आदर साझा मूल्य हैं। फिर कहने लगे सच कहूँ तो डेनिश लोग मुसलमानों और इन युद्धों से जो मध्य पूर्व में हो रहे हैं बहुत डरते हैं, लेकिन कम से कम आज के बाद हमें यह तो पता चल गया है कि वहां पर जो हो रहा है वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की या उनके धर्म की ग़लती नहीं बल्कि उनकी शिक्षा को बिगाड़ा गया है।

विश्वविद्यालय के एक छात्र थे कहते हैं कि उनके भाषण के बिन्दु बड़े स्पष्ट थे। इस्लाम के मूल्यों को जिस तरह व्यक्त किया गया बड़े स्पष्ट थे और ऐसे मूल्य हैं जिन्हें हम सब को अपनाना चाहिए। और कहने लगे मुझ पर और सभी दर्शकों से यह प्रमाणित किया है कि इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म है और यह कुरआन की आयतों के उद्धरणों से प्रमाणित किया और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन और उनके ख़लीफ़ा के उदाहरण से प्रमाणित किया और यह मुझे बड़ा अच्छा लगा और जमाअत अहमदिया के लक्ष्यों को भी स्पष्ट किया जिससे मुझे सही इस्लाम को समझने का मौका मिला।

एक और मेहमान ने अपनी भावनाओं को इस तरह व्यक्त किया कि जिस तरीके से उन्होंने हमारी पीढ़ी और वर्तमान समस्याओं के बारे में बात की और कुरआन को आधार बनाकर इन समस्याओं का समाधान बताया वह बहुत ही उच्च थी। कम से कम मुझे आज से पहले कभी पता नहीं था कि कुरआन न्याय के बारे में इतना कुछ कहता है। फिर कहने लगे कि इस्लाम के बारे में मेरे विचार बिल्कुल बदल गए हैं। पहले मुझे केवल वही पता था कि मीडिया बताता था लेकिन अब मैं दूसरी ओर की वास्तविकता को देख लिया है। फिर कहने लगे समय के ख़लीफा ने कुरआन की एक आयत का उद्धरण दिया है जिस में उल्लेख था कि उन लोगों से भी न्याय करना चाहिए जिन्हें मनुष्य पसंद नहीं करता और यह भी अच्छा लगा कि उन्होंने बताया कि पहले दौर के मुसलमान तो यहूदी तथा इसाइयों से प्यार का व्यवहार करते थे। इस बात ने मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव किया।

फिर हियोमेनेस्टी सोसायटी से जुड़ी एक महिला कहती हैं। शांतिपूर्ण संदेश के बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है। मीडिया केवल बुरी बातें सामने लाता है और अच्छी चीज़ों के बारे में कुछ नहीं कहता। डेनमार्क का सारा मीडिया आज यहां मौजूद होना चाहिए था और मैं अपने देश के लोगों के इस व्यवहार से बहुत निराश हुआ हूँ।

फिर एक डेनिश महिला हैं कहने लगीं मुझे इस्लाम के बारे में कुछ पता नहीं था मगर आज मैंने बहुत कुछ सीखा है और मैं ख़ुश हूँ कि इस दृष्टि से आप के ख़लीफा मेरे शिक्षक हैं। मैं मानती हूं कि इस्लाम शांतिपूर्ण धर्म है। फिर यह कहने लगीं कि मेरी इच्छा है कि लोग उनके संदेश पर ध्यान दें। मैं चाहती हूँ कि इस भाषण का डेनिश अनुवाद मिल जाए ताकि सब शब्द इसी तरह से अवशोषित कर सकूँ और दूसरों को भी बता सकूँ। फिर उन्होंने कहा कि ख़लीफा का संदेश पूरे डेनमार्क में फैलाना चाहिए। हमें उनके संदेश को मानना होगा और उनसे सीखना होगा। मुझे लगता था कि सारे मुसलमान हिंसक होते हैं मगर अब मुझे ऐसे विचार रखने पर बहुत शर्म महसूस हो रही है। बहुमत उनमें से अच्छी है मगर मीडिया ने हमारे मन भर दिए हैं। फिर कहा, मेरे पति मुझे आज सुबह यहां आने से मना कर रहे थे क्योंकि उन्हें लग रहा था कि वहाँ कोई हमला हो जाएगा या कोई आत्मघाती हमला हो जाएगा मगर मैंने उन्हें आने पर मजबूर किया क्योंकि मैं उत्सुक थी और अब वह ख़ुश हैं कि वह भी आ गए। (दोनों पति पत्नी आए थे) बल्कि कहने लगीं बल्कि वह तो काफी भावुक हो गए हैं। फिर कहने लगी तो कहूँगी कि जो निमंत्रण के बावजूद नहीं आया वह बड़ा मूर्ख है।

एक डेनिश राजनीतिज्ञ कैम लो फहोम (Kim Lofholm) ने कहा कि यह मेरा पहला अवसर था कि मैं किसी ख़लीफा से मिला हूं और उनसे मिलने का अनुभव मेरे जीवन में किसी और मुसलमान से मिलने से काफी अलग था। बताने वाले को जो उन्होंने कहा आप के इमाम इस्लाम के बारे में वह बात करते हैं जो अन्य अरब मुसलमान नहीं करते जिनसे मैं मिला हूँ। आपके ख़लीफा यह बात बहुत स्पष्ट करते हैं कि इस्लाम सभी धर्मों को स्वतंत्रता देता है। कहने लगे दुनिया को ख़लीफा की आवाज़ को सुनने की ज़रूरत है उनके शब्दों को दूर फैलना चाहिए। शायद आप एक छोटी सी जमाअत हो मगर आपका संदेश बहुत बड़ा है। फिर कहने लगे यह समारोह बहुत जानकारी पूर्ण था। जैसे मैंने मुहम्मद नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और कुरआन के बारे में जाना जैसे यह कि उन्होंने ईसाइयों को मस्जिद में इबादत करने दी और यह भी कि वह हर प्रकार के anti semitism के ख़िलाफ थे।

अमेरिकन एंबेसी के प्रतिनिधि कहने लगे कि ख़लीफा ने इस्लाम का असली चेहरा दिखाया। लोग ब्रेसेल्स और पेरिस के हमलों के बाद इस्लाम से डरने लग गए थे मगर ख़लीफा ने स्पष्ट किया कि आतंकवाद का इस्लाम से कोई संबंध नहीं है। इस्लाम एक ज्ञान और शांति का संदेश है। मैं एंबेसेडर को सभी बिंदुओं के बारे में बताऊँगा जिन का ख़लीफा ने उल्लेख किया है और इन गंभीर विषयों को भी बताऊँगा जिन का ख़लीफा ने उल्लेख किया है अर्थात् अभिव्यक्ति का आज़ादी और ये कि आजकल लोगों को आपस में जोड़ने है की ज़रूरत है।

एक डेनिश मेहमान जो शिक्षक हैं, कहने लगीं आज मैंने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा है और मैं अपने छात्रों को जा कर वह सब कुछ बताना चाहूंगी जो कि मैंने आप के ख़लीफा को कहते सुना। कहने लगीं कि बहुत से लोग इस्लाम से भयभीत हैं मगर ख़लीफा से मैंने यह सिखा है कि हमें इस्लाम से नहीं बल्कि आतंकवाद और चरम पंथ से रुकना चाहिए और इस्लाम और आतंकवाद दोनों एक दूसरे से अलग हैं। कहने लगीं कि मुझे लगा था कि मैं इस्लाम को जानती हूँ लेकिन वास्तव में मुझे कुछ नहीं पता था जैसे मुझे यह नहीं पता था कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईसाइयों और यहूदियों से नेक सलूक करते थे इस बात ने मुझे बहुत भावुक कर दिया। उनका भाषण बहुत संतुलित था। कुछ मुसलमानों और ग़ैर मुसलमान जिनके कार्य बुरे हैं उन सब पर भी उन्होंने आलोचना की ।

एक मेहमान ने कहा कि संबोधन जिस अंदाज में पेश किया मैंने देखा। आप ने अन्य वक्ताओं की बात को भी ध्यान से सुना। फिर कहने लगीं कि तीसरे विश्व युद्ध

के बारे में आप की बातें बहुत ज्ञान वर्धक थीं। उन्हें सुन कर मैं थोड़ा घबरा भी गई हूँ, लेकिन आप की बात से ही फिर एक प्रकार की शान्ति महसूस हुई।

माल्मो में भी मस्जिद के उद्घाटन में 140 से अधिक स्वीडिश मेहमान और सांसद, माल्मो शहर के मेयर पुलिस प्रमुख सिटी चर्च के प्रतिनिधि विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर और विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित लोग शामिल हुए।

एक यहूदी मेहमान ने कहा कि आज का यह दिन मेरे लिए बहुत जानकारी पूर्ण था क्योंकि मैंने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा है। कहने लगे कि दुनिया में इस्लाम के बारे में बहुत अधिक नकारात्मक सोच पाई जाती है और हम सभी मुसलमानों के आतंकवाद से डरते हैं। इसलिए मैं एक मुसलमान नेता के केवल प्यार के संदेश को सुनकर हैरान रह गया। कहने लगे कि उन्होंने कहा कि आप को ख़ुदा की इबादत करनी चाहिए मगर साथ ही मानवता से प्यार भी करना चाहिए। कहने लगे ख़लीफा ने मुझे ऐसा महसूस कराया कि मुसलमान भी हमारे भाई हैं और मेरे दिल में फिलीस्तीनियों के लिए दया बढ़ी और यह विचार आया कि शायद उन में सभी बुरे नहीं हैं। बहरहाल अपना दोष तो कोई नहीं मानता लेकिन यह स्वीकार कर लिया उन्होंने कि हमें दया दिखानी चाहिए।

एक महिला जो ईसाई पादरी हैं अस्पताल में काम करती हैं। कहने लगी मुझे लगता है कि यह बिल्कुल उचित बात है कि यहाँ माल्मो में और यूरोप में लोग मुसलमानों और मस्जिदों से डरते हैं और ख़लीफा ने शांति के बारे में और इस बारे में कि लोगों के उत्तरदायित्व किया हैं बड़ी महत्त्वपूर्ण बातें की हैं। उन्होंने हमें इस मस्जिद के उद्देश्यों के बारे में बताया और मैं उम्मीद करती हूं कि वह दूसरों को अपने लक्ष्यों के बारे में समझाने में सफल हो जाएंगे। बेशक उन्होंने मुझे तो राज़ी कर लिया है। इस मस्जिद के उद्देश्यों का विषय बहुत महत्त्वपूर्ण था और उसका हर शब्द सार्थक और गहरा था। फिर कहने लगीं कि उन्होंने संदेश दिया कि एक दूसरे से भय नहीं करना चाहिए बल्कि एक दूसरे को समझना चाहिए और एक दूसरे के विचारों को बाँटना चाहिए। फिर कहने लगीं वास्तविकता तो यह है कि आप के ख़लीफा के भाषण ने मुझे हिला दिया है। मैं बहुत भावुक हो गई हूँ। आज मैंने एक मुसलमान नेता को केवल शांति के बारे में बोलते सुना और उन्होंने मुझे बताया कि इस्लाम मानवता की सेवा का धर्म है। उनके भाषण का अच्छा हिस्सा था कि उन्होंने कहा कि मानवता को अपने निर्माता को पहचानना होगा और ख़ुदा में विश्वास रखना चाहिए। यही मेरा भी विचार है।

माल्मो शहर के मेयर एंडरसन साहिब ने अपने भाषण में शांति की स्थापना का आश्वासन करवाया और इस शहर और क्षेत्र में निर्माण होने वाली मस्जिद के वास्तविक लक्ष्य भी बयान किए। इसलिए इस मस्जिद को हम इस शहर में शांति और अंटी गरेशन का माध्यम समझते हैं। एक पत्रकार ने कहा बड़ा आश्चर्य है कि इस मस्जिद के व्यय जमाअत के लोगों ने अपनी जेब से अदा किए। यह बात मेरे लिए बहुत आश्चर्य का विषय थी क्योंकि यह कोई मामूली रकम नहीं थी बल्कि तीस लाख क्रोनर की बात है। फिर कहने लगे आप लोगों ने सारा काम ख़ुद किया बड़ी उपलब्धि है। बहुत प्रभावित हूँ। यह कहने लगें कि आतंकवाद और उत्पीड़न की घटनाएं देखता हूँ मगर आप लोग उनसे अलग हैं। उन्होंने अपनी घटना सुनाई। कहने लगे कि एक समय पहले मैं एक सुपर मार्केट में जा रहा था। वहाँ एक व्यक्ति ने मुझे पूछा कि क्या मैं मुसलमान हूँ पर मैंने उससे कहा कि नहीं मैं मुसलमान नहीं ईसाई हूँ। वह मुझे कहने लगा कि अगर तुम ईसाई हो तो नरक में जाओ। अत: कहता है मुसलमानों की यह सोच है लेकिन आप लोगों की सोच बिल्कुल अलग हैं। ये बातें आप अहमदियों में नजर नहीं आतीं।

एक मेहमान जो माल्मो विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं। कहने लगे ख़लीफा का ख़िताब बहुत प्रभाव रखने वाला था। शांति, प्यार, मुहब्बत, सहिष्णुता का बहुत सकारात्मक और विश्वव्यापी संदेश हमें दिया है।

इसी तरह Lund university Malmo में इस्लाम के प्रोफेसर भी आए हुए थे। कहने लगे कि ख़लीफा का ख़िताब बेहद दिलचस्प और अपने अंदर प्रभाव रखने वाला था। संबोधन समाप्ति के बाद मैंने देखा कि लोग भाषण के बारे में एक दूसरे से बातें कर रहे थे और सभी लोग ही इससे प्रभावित नज़र आ रहे थे। कुछ लोगों ने तो इस भाषण की नकल दिए जाने की मांग की। कहने लगे कि सब लोग यहाँ इकट्ठे थे मैंने देखा कि जिस व्यक्ति ने यहां पर सुन्नियों की पहली मस्जिद निर्माण की थी वह भी इस समारोह में आया हुआ था। यहूदी भी इस समारोह में थे ईसाई थे अन्य धर्मों वाले भी थे।

स्वीडिश संस्थान "चर्च ऑफ सेनटालोजी" के चीफ सूचना भी आए हुए थे। कहने लगे ख़लीफा ने अपने भाषण में एक वाक्यांश जो कहा मुझे बहुत अच्छा लगा और वह वाक्य था कि एक बड़े लाभ के लिए हमें अपने निजी हितों को अलग करना चाहिए। एक दोस्त माइकल जिनके माता पिता पोलिश हैं। स्वीडन में रहते हैं कहने लगे कि भाषण हर दृष्टि से पूर्ण था। उसमें शांति और एक दूसरे की मदद करने का संदेश था उन्होंने अफ्रीका का और अफ्रीका में स्कूल और दूसरी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं, उन का वर्णन किया। कहने लगा कि मैं ख़ुदा में विश्वास रखता हूँ मगर यहां पर प्राय लोग, आमतौर से जो दूसरे लोग हैं वे नहीं रखते इसलिए मैं बहुत गर्व महसूस कर रहा हूं कि ऐसा व्यक्ति स्वीडन आया जो ख़ुदा तआला और एक निर्माता में विश्वास रखता है। भाषण के सुनने के बाद अब मैं इस्लाम से नहीं डरता बल्कि चरम पंथियों से डरता हूँ। मुझ पर यह स्पष्ट हो गया कि ये दोनों आपस में अलग अलग हैं।

फिर एक मेहमान मुसलमान हुसैन अब्दुल्ला साहिब योगोसलाविया से थे। कहने लगे कि ख़लीफा के शब्दों ने मुझे छू लिया है और मैं उनकी हर बात से सहमत हूं। उन्होंने इस्लाम का इस शैली में बचाव किया जो अन्य मुस्लिम नहीं कर सकते। सहिष्णुता और दूसरों की मदद करने पर ज़ोर दिया और कहा कि इस्लाम की शिक्षा यह है कि हम सभी ज़रूरत मंदों की मदद करें कि अब मैं जमाअत अहमदिया पर गर्व करता हूँ। लोगों के इस्लाम के बारे में ग़लत भाव हैं और यह कोई आसान काम नहीं है कि उन्हें ठीक किया जाए मगर ख़लीफा इस काम में सब से आगे हैं।

एक स्वीडिश मेहमान ने अपना विचार व्यक्त किया कि इस शाम ने मुझे बेहद प्रभावित किया है और मैंने सीखा है कि इस्लाम क्या है। ख़लीफा ने कुछ ही मिन्टों में कई विषयों पर बात की और इस्लाम का इस रंग में बचाव किया कि मैंने पहले कभी नहीं सुना। कहने लगा उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि कुछ मुसलमान बुरे हैं मगर ख़लीफा ने कुरआन का हवाला दे कर यह प्रमाणित किया कि ऐसे लोग कुरआन की शिक्षा के ख़िलाफ जा रहे हैं।

इस संबंध में एक राजनीतिज्ञ ने कहा कि भाषण में उन्होंने कहा कि आप को एक वास्तविक मुसलमान से शांति महसूस करनी चाहिए और जब समारोह में था तो मैं वास्तव में शांति महसूस कर रहा था।

एक ईसाई पादरी कहने लगे कि मुझे आप के ख़लीफा के भाषण के हर शब्द से सहमति है विशेषकर मुझे उनकी यह बात पसंद आई है कि हमें ख़ुदा को याद रखना चाहिए और यही धर्म का आधार है तथा यह कि उन्होंने शुरू में जो कुरआन पढ़ा तो मुझे वह बहुत आध्यात्मिक और हिला देने वाला लगा।

एक मेहमान कहने लगे मुझे आज ऐसा लगा कि मैं किसी और दुनिया में हूँ। केंद्रीय विषय भी यही था कि एक दूसरे का ख्याल रखें विशेष रूप से उनका जो सबसे कमज़ोर और ज़रूरत मंद हैं। फिर कहने लगा ख़लीफा ने कुरआन के द्वारा प्रमाणित किया कि धर्म दिल का मामला है। उन्होंने वास्तव में मुझे शान्ति दिलाई और मुझे उम्मीद है कि दूसरों को भी जो यहाँ मौजूद थे इस तरह लाभ उठाया होगा।

एक मेहमान ने कहा कि आज के भाषण में बहुत विषयों पर बात की। लोग कहते हैं कि इस्लाम आतंकवाद का धर्म है, लेकिन आप के ख़लीफा के संदेश से काफी अलग है।

फिर एक स्वीडिश मेहमान ने कहा कि इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा यह बड़ी अच्छी बात थी कि जिस तरह मीडिया हमें हर समय इस्लाम के बारे में बताता है कि यह एक हिंसक धर्म है मगर आज हमें इसके विपरीत ही सुनने को मिला। ख़लीफा ने हमें तसल्ली दिलाई और हमारे डर को दूर किया और प्रमाणित किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शांतिपूर्ण थे।

फिर एक मेहमान ने कहा आज यहां आने से पहले इस्लाम के बारे में भयभीत थी मगर आज जो मुझे दिखाई दिया और जो मैंने देखा वह बिल्कुल अलग था। ख़लीफा का संदेश दया, सहानुभूति और शांति का संदेश था। यह शिक्षा देते हैं कि आप को प्रत्येत व्यक्ति से उनके धर्म की परवाह किए बिना प्रेम करना चाहिए। इसने मेरे दिल को छुआ तथा यह भी सुनकर अच्छा लगा कि इस्लाम पड़ोसियों के अधिकार के विषय में शिक्षा देता है।

इस तरह की बहुत सारी प्रतिक्रियाएं मेहमानों की हैं। बौद्ध भी हैं, ईसाई भी हैं और सब ने इस बात को प्रकट किया कि इस्लाम की शिक्षा और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श जो है वह निश्चित रूप से आतंकवाद के ख़िलाफ है।

एक पार्लियामेंट के सदस्य ने कहा कि ख़लीफा को हर जगह और हर मंच पर इस्लाम का प्रतिनिधित्व करना चाहिए और लोगों को उनकी बात सुननी चाहिए अगर किसी को इस्लाम का कुछ भी भय था तो वह आज दूर हो गया होगा। फिर एक मेहमान ने कहा कि यह भाषण ऑस्ट्रिया के लोगों को देना चाहिए क्योंकि इन देशों में लोग इस्लाम की नफरत और इस्लाम के भय में कट्टरपंथी हो चुके हैं। उन्हें

यह भाषण सुनने की सख्त ज़रूरत है ताकि वे सीख सकें कि इस्लाम शांति का धर्म है। ख़लीफा ने बहुत खूबसूरती से मस्जिदों के उद्देश्यों के बारे में समझाया और फरमाया कि मस्जिद का अर्थ शांति है और कहा कि नमाज़ का अर्थ भी शांति और सुरक्षा है। मुझे यह भी अच्छा लगा कि आप के ख़लीफा ने बताया कि जमाअत अहमदिया का राजनीति से कोई संबंध नहीं है और केवल शांति स्थापित करने के बारे में चिंता करती है और मुझ पर यह बात बहुत प्रभावित हुई जब ख़लीफा ने कहा कि अहमदी मानवता की पीड़ा दूर करना चाहते हैं और उनकी मदद करना चाहते हैं तो यह भी बहुत दिलचस्प बात थी कि ख़लीफा ने बताया कि नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक मस्जिद ज़रार को गिरा दिया गया था जिससे प्रमाणित होता है कि मस्जिदें केवल शांति का स्थान होती हैं।

स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में भी एक रेसपशन थी। वहाँ भी छह सांसद शामिल हुए। दूसरे सरकारी अधिकारी भी थे। विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित लोग थे और वहाँ भी लोगों ने बड़ी अच्छी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं।

एक मेहमान ने कहा कि मुझे आज बहुत कुछ सीखने का मौका मिला है यह बहुत प्रभावशाली था बल्कि इससे भी बढ़कर यह उम्मीद बंधी है। मैं बहुत आभारी हूँ कि ख़लीफा आए। ख़लीफा के संदेश ने हमें एहसास दिलाया कि हम किसी विवाद को देखकर आंखें बंद न कर लिया करें कि यह ख़ुद ही खत्म हो जाएगा। यह बहुत ठोस संदेश था और मैं इसके लिए बहुत आभारी हूँ।

फिर एक मेहमान ने कहा क्योंकि आजकल दुनिया में ऐसी ताकतें काम कर रही हैं जो इंसान को इंसान से दूर करना चाहती हैं। सब को एक जगह इकट्ठा करने में हर दृष्टि से सफल हुए हैं क्योंकि जब हम मिलते हैं तो हमारी आँखें खुलती हैं और हमें ओर अधिक सीखने को मिलता है।

इराक से आने वाले एक ईसाई प्रवासी सलाम साहिब ने कहा कि मैंने इराक में कभी ऐसी बातें नहीं सुनीं। वहाँ लोग इस्लाम की वह शक्ल नहीं देते जो आपके ख़लीफा बता रहे हैं। काश कि इराकी लोग ख़लीफा की बात सुन लेते तो हमें इस तरह पलायन न करना पड़ता और यहाँ स्वीडिश लोगों के सामने भिखारी बनकर न आना पड़ता। यहाँ स्वीडिश लोगों को लगता है कि मैं कोई अधिकार जमाने आया हूँ। यह एहसास मेरे लिए बहुत बुरा है। इराक में आप के ख़लीफा जैसा एक व्यक्ति नहीं है। ख़लीफा तो साफ साफ बात करते और बताते हैं कि दुनिया में क्या हो रहा है। आप की जमाअत सभी मुस्लिम समुदायों से बेहतर है।

फिर एक मेहमान कहती हैं कि जो संदेश ख़लीफा ने दिया यही मूल संदेश है जो सभी धर्मों ने शुरुआत में दिया है हर धर्म की बुनियादी शिक्षा यही है। ख़लीफा एकरूपता की ओर बुला रहे हैं। आपकी बातें सुनकर मुझे विश्वास हो गया है कि दुनिया की समस्याए धर्म के कारण नहीं है अगर मुसलमानों के साथ हमारे मतभेद हैं वह धर्म नहीं बल्कि संस्कृति के हैं।

डेनमार्क में इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में जो कवरेज हुई है उस में उन का एक राष्ट्रीय अखबार "ईसाई बलादत" है। उसने होटल में जो फंकशन हुआ था उसकी खबर दी पढ़ने वाले तो पचास हज़ार ही हैं। इसी तरह एक और रेडियो 24 की पत्रकार साक्षात्कार के लिए मिशन आई और लगभग पौने घंटे का साक्षात्कार लिया और फिर उसे डेनिश अनुवाद के साथ पूरा का पूरा प्रकाशित किया और सुनाया। इस रेडियो के एक समय में दर्शकों की संख्या पच्चीस से चालीस हज़ार है। टी वी पी आर अपनी खबरों में कवरेज दी। इसके दर्शकों की संख्या दो लाख है। इसी तरह अन्य मीडिया आदि द्वारा कुल लगभग तीन लाख लोगों तक इस्लाम का यह संदेश पहुंचता रहा या पहुंचा।

इसी तरह स्वीडन में विभिन्न अख़बारों और रेडियो चैनल, टीवी चैनल आदि के छह साक्षात्कार हुए और नेशनल टीवी पर उन्होंने समाचार भी दिए। इस तरह कुल मिलाकर लगभग आठ लाख के लगभग लोगों तक स्वीडन में भी संदेश पहुंचा।

अत: जिस तरह जमाअत का संदेश पहुँच रहा है और जिस तरह लोगों की प्रतिक्रियाएं हैं जो मैंने वर्णन की हैं सामान्य रूप से इस्लाम की शिक्षा सुनकर उन लोगों को वास्तविकता का ज्ञान हुआ है कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा अल्लाह का हक़ अदा करने में है और इसके साथ ही सुरक्षा और शांति का संदेश है और बन्दों का अधिकार देना है। और यह लोगों को पता लग गया कि जमाअत अहमदिया क्योंकि ख़िलाफत के साथ जुड़ी हुई है इसलिए यह अधिकार दे रही है। तो यह मुख्य बात है कि हर अहमदी इस बात को समझे कि ख़िलाफत के साथ जुड़े रहकर ही यह अधिकार सही रूप में अदा कर सकते हैं।

वास्तविक ख़िलाफत केवल अपनों के भय को शांति में नहीं बदलती बल्कि दूसरों के भय को भी शांति में बदलती है और यही प्राय प्रतिक्रियाएं हैं जो लोगों ने वर्णन की हैं उन्होंने ये कहा है जिसका सार मैंने वर्णन किया है कि उनके जो भय की स्थितियाँ थीं वह यहाँ हमारे फंगशनों पर आकर शांति में तब्दील हो गईं। यह क्योंकि अल्लाह का वादा है और इसलिए अल्लाह तआला के समर्थन भी साथ हैं जिस से इस्लाम की सुंदर शिक्षा दूसरों पर प्रभाव डालती है। इसलिए कई ने कुरआन करीम पढ़ने को भी व्यक्त किया एक दो उदाहरण भी मैंने प्रस्तुत कीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से हटकर अगर कोई इस ज़माने में ख़िलाफत की स्थापना करना चाहता है या चाहेगा तो वह विफल होगा और शांति स्थापित नहीं कर सकेगा। अत: हम देखते हैं कि "ख़िलाफत ऊला" के समय में या जो प्रारंभिक ज़माने में ख़िलाफत राशिदीन के युग में जब वास्तविक ख़िलाफत थी तो हज़रत उमर के युग में किया हुआ। सीरिया और इराक में ऐसी शांति स्थापित की है कि वहाँ ईसाई उस समय की रोमन सरकार ने फिर से कब्ज़ा करने की कोशिश की, रोते थे कि मुसलमान फिर से वापस आएं और जब मुसलमान फिर से वापस आए तो उन्होंने खुशियां मनाईं

लेकिन अब क्या हो रहा है। सीरिया और इराक में ख़िलाफत के नाम पर जो आंदोलन शुरू हुआ एक तो इसमें कोई शक्ति नहीं थी। तथ्य नहीं था और जो शुरू में पहले शक्ति थी वह भी अब समाप्त हो गई और कोई ज़ोर नहीं रहा। जो काम ख़िलाफत के नाम पर शुरू हुआ था दो तीन साल में बल्कि इससे भी कम समय में वह सिर्फ एक संगठन का नाम रह गया जिस ने न अपनों को शांति दी है न ग़ैरों को शांति दी है। वहां जाने वाले कई ऐसे हैं जो इस्लाम और ख़िलाफत के नाम पर एक भावना के साथ गए थे यहाँ से यूरोप से भी जाते रहे लेकिन ग़ैर इस्लामी हरकतें देखकर निराश भी हुए। कई उनमें ऐसे हैं वापस आना चाहते हैं लेकिन नहीं आ सकते। यह भी मीडिया में आ रहा है। भय की स्थिति में रह रहे हैं। सभी रास्ते उनके लिए बंद हैं।

चरम पंथ की यह अवस्था है कि पिछले दिनों एक खबर थी कि औरत का छोटा दूध पीता बच्चा भूख से तड़प रहा था और घर से दूरी दूर थी जब महिला ने एक अलग जगह जाकर बिल्कुल पेड़ के नीचे बच्चे को स्तन पान शुरू किया तो उस समय यह तथाकथित इस्लाम के ठेकेदार और इस्लाम की रक्षा करने वाले आ गए और इन तथाकथित ख़लीफा के सैनिकों ने इस महिला से उसको बच्चा छीना कि तुम सड़क पर बैठी दूध पिला रही हो हालांकि वास्तव में एक जगह अलग जगह थी और फिर बच्चा छीन गोलियां मार कर उस औरत को मार दिया तो यह वह अत्याचार हैं जो वहाँ हो रहे हैं। और मारा इस बात पर कि तुम यह ग़ैर इस्लामी कार्य कर रही है। उन्होंने तो अपनों की शांति भी छीन ली है तो ग़ैरों को उन्होंने क्या शांति देनी है।

जैसा कि मैंने उदाहरण दिया कि उमर के ज़माना में तो ईसाई भी इस बात से ख़ुश थे कि हमें मुसलमान शांति दे रहे हैं और ईसाई शांति नहीं दे रहे और आज इसके बिल्कुल उलट हो रहा है लेकिन यह ख़िलाफत अहमदिया ही है जो अपनों और दूसरों के भय को शांति में बदल रही है और विभिन्न लोगों की प्रतिक्रियाओं से यह स्पष्ट हो रहा है कि अल्लाह तआला का समर्थन ख़िलाफत अहमदिया के साथ हैं और कभी कम नहीं होते और जैसा कि मैंने कहा कि पिछले 108 साल का इतिहास इस बात का गवाह है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया था कि अगर यह किसी इंसान का काम होता तो कब का खत्म हो गया होता। अत: यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत की स्थापना और ख़िलाफत का इलाही वादा है और वही चीज़ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में थी इसे समाप्त करने की लोगों ने कोशिश की लेकिन खत्म नहीं हुआ वह आज भी कोशिश करेंगे तो अल्लाह की कृपा से कभी खत्म नहीं कर सकते। और यह ख़िलाफत और ख़िलाफत की प्रणाली अल्लाह तआला की कृपा से हमेशा जारी रहने के लिए है।

अगर हम अपने संसाधनों को देखें तो इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि इतनी बड़ी संख्या में इस्लाम का संदेश पहुंचा सकते हैं लेकिन जब अल्लाह की तकदीर ने तय कर लिया है कि उसने यह संदेश पृथ्वी के किनारों तक पहुंचाना है तो फिर इन उन्नतियों को कौन है जो रोक सकता है। कोई सांसारिक शक्ति रोक नहीं सकती और अल्लाह तआला से हमें दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला प्रत्येक अहमदी को हमेशा सच्चाई के साथ ख़िलाफत अहमदिया से जुड़ा रखे और हम अल्लाह के वादों को अधिक शान से जल्दी पूरा होता हुआ देख सकें।

नमाज़ के बाद तीन नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा। एक नमाज़ जनाज़ा हाज़िर है और दो ग़ायब। जनाज़ा हाज़िर है आदरणीय चौधरी फज़ल अहमद साहिब वकफ जो मास्टर गुलाम मुहम्मद साहिब मरहूम ऑफ ननकाना के पुत्र थे। 23 मई 2016

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 30 June 2016 Issue No. 17

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

को 80 साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप उमर दीन साहिब बंगवी सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नवासे और मौलवी करम इलाही साहिब जफर मरहूम के भतीजे थे। लंबे समय मंडी बहाउद्दीन में रहे फिर जर्मनी शिफ्ट हो गए। कुछ साल से लंदन में मस्जिद फज़ल क्षेत्र में रहते थे। सारा जीवन विभिन्न पदों पर जमाअत की सेवा की शक्ति मिली। मंडी बहाउद्दीन में भी सचिव माल, सचिव तालीमुल कुरआन और नमाज़ के इमाम आदि पदों पर रहे। जहां भी रहे सैकड़ों बच्चों को कुरआन पढ़ाने की तौफीक मिली। 1987 ई के रमज़ान में कलमा-ए-तैयबा के मामले में अल्लाह तआला की राह में कैद होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अत्याधिक नेक, सालेह, कुरआन से प्यार करने वाला, दयालु और बुजुर्ग व्यक्ति थे। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पांच बेटियां और दो बेटे यादगार छोड़े हैं अल्लाह तआला मरहूम के स्तर को ऊंचा करे।

दूसरा जनाज़ा है आदरणीय दाऊद अहमद साहिब शहीद पुत्र आदरणीय हाजी ग़ुलाम मोहिउद्दीन साहिब का है जो कराची में रहते थे। 24 मई 2016 ई को 60 साल की उम्र में अहमदियत के विरोधियों ने रात करीब 9 बजे आप को घर के बाहर फायरिंग कर शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। जानकारी के अनुसार दाऊद अहमद साहिब अपने घर के बाहर एक ग़ैर जमाअत के इंतज़ार में बैठे थे। उनके मित्र थोड़ी दूरी पर ही थे कि इसी दौरान एक मोटरसाइकिल पर सवार दो अज्ञात लोग आए और पीछे बैठे व्यक्ति ने बाइक से उतर कर आप पर फायरिंग कर दी। ग़ैर जमाअत दोस्त उनकी मदद के लिए आगे बढ़े तो हमलावरों ने उनके पैरों पर भी फायर किए और मौके से फरार हो गए। फायरिंग के परिणाम में आदरणीय दाऊद साहिब को तीन गोलियां लगी जो छाती और पेट से आर-पार हो गई। गोलियों की आवाज़ सुनकर आसपास के लोग घटनास्थल पर एकत्र हुए और उन्होंने आदरणीय दाऊद साहिब को तुरंत पास स्थित अस्पताल में पहुंचाया जहां से प्राथमिक चिकित्सा के बाद दोनों को नेशनल अस्पताल शिफ्ट कर दिया गया जहां डाक्टर ने दाऊद साहिब का ऑपरेशन भी किया लेकिन पेट में लगने वाली गोलियों ने जिगर और बड़ी और छोटी आंत को गंभीर रूप से प्रभावित किया था। सीने में लगने वाली गोलियों से बहुत अधिक रक्त बर्बाद हो गया था इसलिए बचन सके और ऑपरेशन के दौरान ही शहादत का जाम पीया। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। जो उनके ग़ैर जमाअत दोस्त थे घायल थे वह अल्लाह तआला की कृपा से बेहतर हैं।

स्वर्गीय शहीद के परिवार में अहमदियत का आरम्भ आप के दादा हज़रत मौलवी अलिफ दीन साहिब ऑफ चविंडह ज़िला सियालकोट के माध्यम से हुआ था जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथ पर बैअत कर के जमाअत अहमदिया में शामिल हो गए थे। फिर यह परिवार रबवा शिफ्ट हो गया और 1956 ई में रबवा में उनका जन्म हुआ। उनके पिता नौसेना में कार्यरत थे तो यह कराची चले गए और वहां फिर उन्होंने शिक्षा प्राप्त की उनका एक दुर्घटना में हाथ भी बर्बाद हो गया था लेकिन उन्होंने कभी हाथ की कमी को अपने काम में आड़े नहीं होने दिया। अनगिनत गुणों के मालिक थे। बड़े नरम दिल, क्षेत्र के हर दिल अज़ीज़ व्यक्ति थे ईमानदार, नेक दिल, नेक सीरत, शरीफ़ आदमी थे। घटना के बाद अनुसंधान करने वाले संस्थान जब क्षेत्र के लोगों से जानकारी ले रहे थे तो हर व्यक्ति का यही कहना था कि यह व्यक्ति तो किसी से झगड़ा नहीं कर सकता। झगड़ा करना तो दूर की बात है यह तो दूसरों की मदद करते थे और दूसरों के काम आने वाले नेक इंसान थे। जमाअत की सेवाओं में भी आगे रहे। आप का घर 18 साल तक नमाज़ केंद्र के रूप में इस्तेमाल होता रहा और इसी तरह अंसारुल्लाह और जमाअत के कार्यों में भी सेवा की तौफ़ीक़ उन्हें मिली। उनका एक बेटा इस समय जामिया अहमदिया में चौथे वर्ष में पढ़ रहा है। दो बेटे उन के देश से बाहर काम कर रहे थे। अल्लाह ताला शहीद मरहूम के स्तर को ऊंचा करे और आप के बच्चों को भी उनकी नेकियाँ जारी रखने की ताकत प्रदान करे।

तीसरा जनाज़ा आदरणीय मुहम्मद आज़म इकसीर साहिब का है जो 25 मई 2016 की सुबह रबवा में 74 साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप आदरणीय मौलवी मुहम्मद अशरफ साहिब पूर्व अमीर जमाअत अहमदिया भैरह के यहाँ अक्टूबर 1942 में कादियान में पैदा हुए। आप के परिवार में अहमदियत आप के दादा आदरणीय मुंशी मुहम्मद रमज़ान साहिब द्वारा आई जिन्होंने 1909 ई में बैअत की थी। आप हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माइल साहिब हलाल पूरी के नवासे और आदरणीय मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब जलील के भांजे थे। आप के पिता आदरणीय मौलवी मुहम्मद अशरफ साहिब भी वक्फ जदीद के मुअल्लिम थे। बेसिक शिक्षा मीट्रिक थी फिर 1961 ई में जीवन वक्फ किया और जामिया अहमदिया रबवा में प्रवेश किया। जामिया अहमदिया रब्वा में दाखिल हो गए। 1969 ई में वहां से शाहिद की परीक्षा पास की। इसी दौरान एफ.ए और मौलवी फाज़िल की परीक्षा भी पास की। फिर उनकी नियुक्ति वहाँ नज़ारत इस्लाह व इरशाद और विभिन्न स्थानों पर होती रही। इदारतुल मुसन्नफीन, वकालत तबशीर में भी काम किया और नज़ारत तालीमुल कुरआन में भी काम किया। इस्लाह व इर्शाद स्थानीय में विभिन्न क्षेत्रों में मुरब्बी के रूप में काम किया। 1990 ई से 1998 ई तक प्रकाशन व लेखन की नज़ारत में काम किया। फिर वकालत दीवान में 1999 ई के बाद से 2006 ई तक काम किया। 2006 से 2008 ई तक वकालत प्रकाशन के मासिक तहरीक जदीद के संपादक रहे। अक्टूबर 2008 ई से वफात तक निगरान मुतख़स्ससीन (जामिया पास करने वाले जो विशेष करते हैं) उनके निगरान (संरक्षक) रहे। अल्लाह तआला की कृपा से बड़े सफल मुरब्बी, दाई इलल्लाह , मुनाज़िर थे। उन्होंने कुछ किताबें भी लिखें। अंसारुल्लाह में भी सेवा का अवसर मिला और बड़ा दुआ करने वाले इंसान थे। अल्लाह तआला उनके स्तर को ऊंचा फरमाए। उनके वारिस में उनकी पत्नी के अतिरिक्त तीन बेटियां और एक बेटा है। बेटा यहीं है जो पिता के जनाज़ा पर जा नहीं सका। अल्लाह तआला उन के बच्चों को भी और पत्नी को भी धैर्य और साहस प्रदान करे और अपने पिता की नेकियों को जारी रखने की शक्ति प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

ग़रीब उसे ख़ुब समझ सकते हैं कि जब उनके घर का चिराग़ बुझ जाता है और तीली उनके पास नहीं होती तो वह अपने किसी पड़ोसी या निकटवर्ती के यहां जाते हैं और कहते हैं कि थोड़ी तीली देना अपना चिराग़ जला लूँ। या उनके घर में चिराग़ जल रहा हो तो उसकी बत्ती से अपने चिराग़ की बत्ती को जला कर लेते हैं। इस उदाहरण को अपने सामने रखें और फिर देखो कि मुसलमानों के इस विश्वास का अर्थ यह है कि एक ज़माने में इस्लाम का चिराग़ बुझ जाएगा और इस बात की आवश्यकता होगी कि उसे जलाया जाए। मुहम्मद रसूल अल्लाह अपने आसपास नजर दौड़ाएँगे लेकिन मुसलमानों में उन्हें कहीं रोशनी नज़र नहीं आएगी केवल यहूदियों के घर में एक लैंप जल रहा होगा जिसे देखकर मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन यहूदियों के घर जाएंगे और चिराग़ से इस्लाम के बुझे हुए चिराग को रोशन करेंगे। बताओ क्या इसमें रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान है या आप का सम्मान?

अत: मसीह के जीवन का विश्वास ऐसा ख़तरनाक है कि ख़ुदा का इसमें सम्मान नहीं, रसूल करीम का इसमें सम्मान नहीं, ईसा अलैहिस्सलाम का इसमें सम्मान नहीं केवल मौलवियों का सम्मान है लेकिन ख़ुदा और उनके नबियों की तुलना में इन मौलवियों की सम्मान की क्या वास्तिकता है कि कोई सम्मान वाला मुसलमान उसका ख्याल रख सके। मगर हमारा विश्वास है कि ईसा अलैहिस्सलाम ने जब अपने लोगों का सुधार कर लिया तो अल्लाह तआला ने उन्हें मृत्यु दे दी और अब उम्मते मुहम्मदिया के सुधार के लिए उन्हें ही उम्मती बनाकर नहीं भेजा जाएगा बल्कि अल्लाह तआला रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल के मानने वालों में से एक व्यक्ति को सुधार की भावना के लिए खड़ा कर देगा, वह आप के प्रकाश से प्रकाश ले जाएगा और आप की अनुभूति से अनुभूति और इस तरह वह आप का दास और सेवक बनकर लोगों को फिर इस्लाम में स्थापित करेगा और आप किसी मूसवी नबी से शर्मिंदा नहीं होंगे। यह कुछ मोटी मोटी बातें हैं जिनसे यह समस्या आसानी से हल हो जाती है।

(अन्वारुल उलूम भाग 15 प्रकाशित अल्फज़ल 28 मार्च 1958ई)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad